Totalbhakti.com

श्री अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी

निर्धूताखिल-घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।

प्रालेयाचल-वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपुर्णेश्वरी॥१॥

नानारत्न-विचित्र-भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी

मुक्ताहार-विलम्बमान विलसद्वक्षोज-कुम्भान्तरी।

काश्मीरा-ऽगुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी।

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥२॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्माऽर्थनिष्ठाकरी

चन्द्रार्कानल-भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।

सर्वैश्वर्य-समस्त वांछितकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥३॥

कैलासाचल-कन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी

कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।

मोक्षद्वार-कपाट-पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी

www.totalbhakti.com

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥४॥

दृश्याऽदृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी

लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी।

श्री विश्वेशमन प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥५॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी

वेणीनील-समान-कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।

सर्वानन्दकरी दृशां शुभकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥६॥

आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी

काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा शर्वरी।

कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुंदरी

वामस्वादु पयोधर-प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।

भक्ताऽभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥८॥

www.totalbhakti.com

चन्द्रार्कानल कोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी

चन्द्रार्काग्नि समान-कुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।

माला पुस्तक-पाश-सांगकुशधरी काशीपुराधीश्वरी

शिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी

साक्षान्मोक्षरी सदा शिवंकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।

दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी।

भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥१०॥

अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शंकरप्राणवल्लभे!।

ज्ञान वैराग्य-शिद्ध्यर्थं भिक्षां देहिं च पार्वति॥११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।

बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥१२॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितम् अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

www.totalbhakti.com